षष्ठ अध्याय

'चित्रलेखा' में चित्रित सामाजिक समस्याएँ ---

प्रस्तावना

'चित्रलेखा' में सामाजिक समस्याएँ ---

१) नारी और विवाह की समस्या

२) अवैध प्रेम की समस्या

३) विधवा समस्या

४) वेश्या समस्या

५) घर बाहर की समस्या

६) पाप - पुण्य की समस्या

निष्कर्ष ---

प्रस्तावना --

हिन्दी उपन्यास साहित्य का प्रारंभिक युग भारत की सामाजिक ,धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना की हलचल का युग था । बाल-विवाह,बहुविवाह,साम्प्रदायिकता, विधवा समस्या ,वेश्या समस्या, पाप-पुण्य की समस्या जैसी समस्याओं पर चिन्तन प्रारंभ हो चुका था । हिन्दी उपन्यास साहित्य के माध्यम से हम भारतीय समाज की समस्याओं से परिचित हो सकते हैं ।

भगवतीचरण वर्मा जी के उपन्यास सृजन का आरंभ समस्या प्रधान उपन्यास को लेकर हुआ है । वर्माजी का ' चित्रलेखा ' उपन्यास समस्या मूलक है । उपन्यास का आरंभ विशेष समस्या को आधार बनाकर और पात्रों में वाद-विवाद कराकर होता है । वर्माजी के ' चित्रलेखा ' उपन्यास की पृष्ठभूमि ऐतिहासिक होती हुयी भी उसमें तत्कालीन समस्याओं का चित्रण किया है । ' चित्रलेखा ' का बाह्य रूप,उसकी कथात्मक पृष्ठभूमि-भारतीय होने पर भी, उसकी समस्यायें शाश्वत हैं ।

१) चित्रलेखा में सामाजिक समस्याएँ --

मनुष्य समाज प्रिय प्राणी है । समाज में रहकर वह अपना जीवन व्यतित करता है । मानव - जीवन की अत्यंत स्वाभाविक और समग्र झाँकी उपन्यास में ही प्रस्तुत की जा सकती है । प्रारंभ से ही मनुष्य और मनुष्य-समाज उपन्यास का विषय रहा है । यदि हम किसी देश के उपन्यास साहित्य का अध्ययन करें तो उस देश की सामाजिक गतिविधि से हम बडी सरलता से परिचित हो सकते हैं क्योंकि ' सामाजिक वातावरण और वैयक्तिक अनुभूतियों का वैज्ञानिक रीति से अध्ययन करने की क्षमता जितनी उपन्यास में आधुनिक उपन्यास में रहती है,साहित्य के किसी अन्य रूप में नहीं रहती ।' [१]

उपन्यासकार के लिए समाज वह आधारपीठिका है, जहाँ वह स्वयं जन्म लेकर जीवन - विकासशील सोपानों पर चढता हुआ सामाजिक जीवन का स्वानुभूत चित्र

समाज के लिए प्रस्तुत करता है। समाज से जो कुछ ग्रहण करता है उसमें कलात्मक रंग भरकर सामाजिक मनोरंजन करते हुए जीवन की विशिष्ट प्रतिच्छवि चित्रित करता है। उपन्यास साहित्य अपने को निरंतर समाज से अधिकाधिक सम्पृक्त करने का प्रयत्न करता रहा है। भगवतीचरण वर्माजी ने साहित्य सृजन प्रेमचन्द काल से प्रारंभ किया था, परंतु समकालीन जन-जीवन के साथ-साथ ताजे अतीत के ऐतिहासिक परिवेश में भारतीय सामाजिक जीवन का बहुमुखी चित्रण किया है।

समाज की परिधि बड़ी विस्तृत एवं व्यापक होती है। मानव - जीवन के विभिन्न पुरूषार्थ - धर्म,अर्थ,काम, और मोक्ष - सभी समाज के अंतर्गत ही आते हैं और इनकी पूर्ति समाज में रहकर की जा सकती है। इसीलिए वर्माजी समाज के प्रति निवृत्तिवादी या पलायनवादी मार्ग को अंगीकार नहीं करते हैं। उनकी अनंत साधना का क्षेत्र समाज है। `चित्रलेखा` उपन्यास में वह योगी और भोगी प्रतीकों द्वारा स्पष्ट कर देते हैं कि समाज में पाप-पुण्य कुछ भी नहीं है, वह केवल मनुष्य के दृष्टिकोण की विषमता का दूसरा नाम है। श्वेतांक और विशालदेव पाप-पुण्य को जानना चाहते हैं। इसलिए उनके गुरू महाप्रभु रत्नाम्बर दोनों को संसार के समाज परिधि में छोड़कर अनुभवों के द्वारा पाप - पुण्य का पता लगाने को कहते है। श्वेतांक को भोगी बीजगुप्त के पास छोड़ते हैं, जहाँ उसे पूरे एक वर्ष के बाद बीजगुप्त के संयम और विवेक के कारण वह योगी प्रतित होता है। विशालदेव योगी कुमारगिरि के समीप रहकर अनुभवों द्वारा पाप-पुण्य को जानने की कोशिश करता है। इस तरह प्रेमचन्द के समाज वर्माजी ने अपने साहित्य में यथार्थ को महत्व दिया है। उनके औपन्यासिक साहित्य की व्यापक सामाजिक चेतना के अंतर्गत लोक व्यवहार, संस्कृति और भारतीय आदर्श सब कुछ आ जाते हैं।

भगवतीचरण वर्मा के प्राय: सभी उपन्यास किसी न किसी नारी समस्या से सम्बन्धित है। `चित्रलेखा` में नारी समस्या, अवैध प्रेम,स्वच्छंद प्रेम की समस्या,यौन समस्या,` भूले बिसरे चित्र` में नारी-जागरण,अवैध प्रेम,संयुक्त परिवार,दहेज,वर्ण - व्यवस्था,अन्तर्जातिय विवाह, ` टेढे मेढे रास्ते` में प्रेम तथा विवाह,` सिधी सच्ची बातें` में स्वच्छंद प्रेम की समस्या, नारी-पुरुष के समान अधिकारों की माँग,

स्त्रियों का पुरूष के साथ बाह्य संघर्ष में भाग लेना, ` आखिरी दाँव ' और ` रेखा ' में अनमेल विवाह, अवैध प्रेम, स्वच्छंद भोग, यौन समस्या, ` थके पाँव ' में प्रेम विवाह, दहेज, विवाह के प्रति विद्रोह । इस तरह वर्माजी के उपन्यासों में किसी न किसी प्रकार की समस्या का निर्माण हुआ है ।

१) नारी और विवाह की समस्या --

भारतीय सामाजिक संगठन में विवाह - व्यवस्था में जितनी विविधता दिखाई देती है उतनी अन्य किसी में नहीं है । प्राचीन काल में विवाह के अनेक रूप- ब्राह्म, देव, आर्ष, प्रजापति, असुर, गन्धर्व, राक्षस एवं पैशाच प्रचलित थे । युगीन परिवर्तन में वे समाप्त हो जाने के कारण विवाह की सामान्य पध्दति प्रचलित रही । इसमें लड़के और लड़कियों का विवाह माता-पिता की अनुमति से हुआ करता है । नारी अन्य मामलों में पराधीन थी ही उसी प्रकार वैवाहिक मामलों में भी स्वतंत्रता न प्राप्त कर सकी । वह स्वेच्छा से वर चुनने के अधिकार से वंचित रही, माता-पिता जिस किसी से उसका विवाह - सम्बन्ध स्थापित कर दे विवश होकर इसे स्वीकार करती रही ।

` चित्रलेखा ' में नारी और विवाह को लेकर समस्या उपस्थित हुयी है । क्योंकि वर्माजी के अनुसार व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है और सामाजिक संगठनों में योग देना उसका कर्तव्य है । अगर समाज में रहकर विवाह न करें तो वह अपने कर्तव्य से विमुख होता है । ऐसा हुआ तो समाज में अराजकता फैल जाएगी । सामाजिक नीति-नियमों का उल्लंघन होगा । स्त्रियों का समाज में कोई स्थान नहीं रहेगा । उसकी समाज में बड़ी शोचनिय स्थिति बन जाएगी । इसीलिए ` स्त्री अबला है । प्रत्येक पुरूष का यह कर्तव्य है कि वह एक स्त्री को आश्रय देता है । यदि पुरूष स्त्री को आश्रय न दे, तो स्त्री की दशा बड़ी शोचनिय हो जाय । इधर पुरूष के सामने काफी कठिनाइयाँ आवें । जिस समय तुम विवाह न करके संन्यासी होने की बात सोचते हो, तुम कायरता करते हो । एक अबला को आश्रय देने का तुम्हारा कर्तव्य है, उससे तुम विमुख होते हो । ' [२]

`चित्रलेखा` मे वर्माजी ने मुक्त प्रेम का समर्थन कर नारी के अधिकारों को पहली बार स्वीकृति दी है। `चित्रलेखा` में नर्तकी चित्रलेखा एक नर्तकी होते हुए भी नारी एवं पुरूष की समानता की सम्बन्धी तर्क प्रस्तुत करती है। नारी विषयक परंपरागत मान्यताएँ एवं जड मूल्य उसे स्वीकार नहीं है। नारी और विवाह को लेकर जो समस्या है, पुरूष चाहे जितने विवाह करना चाहता है कर लेता है। परंतु नारी के लिए यह असंभव है। चित्रलेखा योगी कुमारगिरि से प्रश्न पूछती है कि `गुरूदेव,पुरूष दो विवाह कर सकता है,और वह दो पत्नियों से प्रेम कर सकता है फिर स्त्री क्यों ऐसा नहीं कर सकती ....`[३] लेकिन चित्रलेखा इसे अपवाद है। वह अपनी इच्छा की स्वामिनी स्वयं है,अपने जीवन की दिशा निर्धारित करने में समर्थ है। प्रत्येक कार्य का निर्णय वह स्वयं करती है न कि बीजगुप्त का परामर्श लेकर। बीजगुप्त के साथ रहकर भी वह स्वतंत्र व्यक्तित्व रखती है। पुरूष का अधिकार उसे सहन नहीं। बीजगुप्त द्वारा `इतने दिन न आने का कारण` पूछे जाने पर वह उत्तर देती है` अधिकारी हो,इतना नहीं जानती थी। मनुष्य पर मनुष्य का क्या अधिकार है, वह मैं नहीं समझ सकी।`[४] लेखक ने उसे ऐसी नारी के समान चित्रित नहीं किया जो पुरूष की प्रताडना चुपचाप सह ले। नारी को हमेशा पुरूष प्रधान समाज से उपेक्षा प्राप्त हुयी है, तिरस्कार मिला है। जब चित्रलेखा को समाज द्वारा उपेक्षा एवं तिरस्कार मिलता है तब वह शोषण पर आधारित मान्यताओं की अवहेलना करती है। लेखक ने उस नारी की दयनीय स्थिति की ओर सहानुभूतिपूर्वक देखा है जिसे पुरूष प्रधान समाज द्वारा सदैव किसी न किसी नई युक्ति से सामाजिक मान्यताओं को जन्म देकर जीवन पर्यन्त शोषण का पात्र बनाया जाता रहा। कभी शास्त्र-सम्मत विवाह द्वारा पत्नी के गौरव का लालच देकर, कभी नारी के पातिव्रत्य धर्म का स्मरण कराकर। नारी अपना सर्वस्व न्यौछावर करके भी इन पदों की प्राप्ति करना जीवना का उद्देश्य समझाती रही।विद्रोहिणी चित्रलेखा इन सबको नकारती है।` चित्रलेखा` में कुमारगिरि के अनुसार स्त्री अंधकार है, मोह है,माया है और वासना है। ज्ञान के आलोक में स्त्री का कोई स्थान नहीं।[५] वही चित्रलेखा कुमारगिरि को चंद्रगुप्त की सभा में योगी की विजय को पराजय में बदल देती है।

संक्षेप में नारी और विवाह को लेकर जो समस्या थी लेखक ने चित्रलेखा के द्वारा ऐसी प्रगतिशील नारी की कल्पना की है जो अपने व्यक्तित्व के विकास, अपने अधिकार एवं कर्तव्य आदि के बारें में सचेत है। नारी विषयक सामाजिक समस्या पर लेखक ने प्रकाश डाला है। नारी को उँचा दिखाने का प्रयास किया है।

२) अवैध प्रेम की समस्या --

जिस देश और समाज में शादी-विवाह व्यक्ति की स्वतंत्र इच्छा पर निर्भर नहीं अपितु परिवार के कठोर नियंत्रण तथा समाज के अनेक अवरोधों के दमन में संपन्न होता है,तो इस दमन की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप अवैध प्रेम की स्थिति नितान्त स्वाभाविक होगी। वर्माजी के `पतन` उपन्यास से लेकर `प्रश्न और मरीचिका` तक अवैध प्रेम की समस्या दिखाई देती है।`चित्रलेखा` उपन्यास में अवैध प्रेम की समस्या दिखाई देती है।

चित्रलेखा एक ब्राह्मण विधवा नर्तकी थी। वह उस समय विधवा हुयी थी, जिस समय उसकी आयु अठारह वर्ष की थी। विधवा हो जाने के बाद संयम उसका नियम हो गया था,पर बात वैसी ही अधिक दिनों तक न रह सकी। एक दिन उसके जीवन में कृष्णादित्य ने प्रवेश किया। कृष्णादित्य क्षात्रिय और शूद्रा का वर्ण-संकर पुत्र था। कृष्णादित्य एक सुंदर नवयुवक था,और उसकी सुंदरता में एक विशेष प्रकार का आकर्षण था। कृष्णादित्य विधवा चित्रलेखा की तपस्या भंग कर देता है। समाज द्वारा मान्यता न मिलने पर चित्रलेखा प्रेम मार्ग नहीं छोडती। कृष्णादित्य से वह गर्भवती हो जाती है। वे दोनों घर छोडना स्वीकार करते हैं। संपन्न पिता का पूत्र कृष्णादित्य चित्रलेखा कोलेकर भिखारी की भाँती जनक में निकल पडता है। त्याज्य युवक को समाज की भर्त्सना और अपमान असह्य हो जाता है। इस अपमानजनक जीवन की अपेक्षा मृत्यू उसे अधिक प्रिय लगती है। लेकिन चित्रलेखा कृष्णादित्य द्वारा आत्महत्या कर लेने पर समाज की नैतिक मान्यताओं से परास्त न होकर वह उनके विरुध्द संघर्ष करती है। वह नर्तकी बनती है,वेश्या नहीं। नर्तकी होने के कारण प्रेम उसके अधिकार क्षेत्र से बाहर की वस्तु था,किन्तु

समाज की थोथी परम्पराओं की खातिर उसने अपने प्रेम की कुर्बानी देनास्वीकार नहीं किया अपितु बीजगुप्त के प्रति अपने प्रेम प्रकट कर उसकी पत्नी बन कर रहना प्रारंभ कर देती है ।

भगवतीचरण वर्मा ने इस तरह अवैध - प्रेम की समस्या का निर्माण किया है ।

३) विधवा समस्या --

विधवा-प्रथा द्वारा नारी का जितना अमानुषिक शोषण हुआ है, संभवत: समाज के अन्य किसी विधान द्वारा न हुआ होगा । यह प्रथा जहाँ एक ओर अनेक सामाजिक दोषों का परिणाम है, वहीं दूसरी ओर कतिपय सामाजिक समस्याओं की जन्मदात्री है । रूढियों ,परम्पराओं, प्रथाओं और प्राचीन मान्यताओं से ग्रस्त समाज में अनेक समस्याएँ स्वतंत्र न रहकर कई सामाजिक दोषों की शृंखला में कडीबध्द हो जाती हैं । हिंदू समाज में विधवा प्रथा एक ऐसी ही समस्या रही है जो अनेक सामाजिक दोषों को आत्मसात करती हुयी व्यक्ति और समाज के लिए महत्वपूर्ण समस्या बनी फिर भी समाज द्वारा उपेक्षित रही । विधवा बेचारी वैसी ही दु:ख भार से बोझिल जीवन ढोती थी ।

भगवतीचरण वर्माजी ने 'चित्रलेखा' द्वारा विधवा समस्या को लेकर नारी जीवन की एक झाँकी प्रस्तुत की है । नर्तकी चित्रलेखा एक ब्राह्मण विधवा युवती थी । इसके द्वारा लेखक ने नारी को ऊँचाउठाने का प्रयास किया है । नारी की सामाजिक स्थिति सुधारने के लिए किए जा रहे उन प्रयासों का परिणाम हैं, जो पुनर्जागरण - काल में ब्रह्म - समाज तथा आर्य समाज आदि के द्वारा किए जा रहे थे । इसके प्रभाव के कारण बंगाल तथा हिन्दी उपन्यासों में नारी पुरूष की समानता, स्त्री-शिक्षा अन्तर्जातीय प्रेम - सम्बन्धों की चर्चा, वेश्या एवं विधवा की दयनीय दशा आदि का चित्रण किया गया । अंग्रेजी शिक्षा के फलस्वरूप आयी वैयक्तिकता के कारण नारी भी ' व्यक्ति' बनती गयी तथा उसकी समानता एवं मुक्ति का स्वर भी सुनाई पडने लगा । प्रेमचंद के उपन्यासों में जहाँ नारी-मुक्ति सम्बन्धि सुधारवादी-प्रवृत्ति प्रधान रही, वहीं अन्य उपन्यासकारों ने अतीत को केन्द्र बनाकर वेश्याओं के

प्रेम सम्बन्धो का विश्लेषण किया । इससे पूर्व वेश्याओं को समाज का कोढ समझा जाता था, किन्तु इस युग के उपन्यासकारों ने इसका विरोध किया । मगवतीचरण वर्मा ने भी तद्युगीन प्रभाव के परिणाम स्वरूप चित्रलेखा नामक नर्तकी को केन्द्र में रखकर उपन्यास की रचना की जिसमें अपने नारी विषयक दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया । प्रेमचंद युगीन उपन्यासकारों ने विधवा तथा वेश्या समस्या को रेखांकित करते हुए भी नारी को पुनर्विवाह की अनुमति नहीं दी, समाधान के रूप में आश्रम-व्यवस्था को ही श्रेयस्कर माना । किन्तु मगवतीचरण वर्मा ने विधवा अथवा नर्तकी को भी प्रेम करने का उतना ही अधिकार दिया जितना समाज के सम्मानित सदस्य बीजगुप्त को । उन्होंने विधवा को पत्नी के बराबर स्थान प्राप्त करने योग्य बताया है ।

४) वेश्या समस्या --

वेश्या नारी जीवन का भारतीय समाज में एक अभिशापित अंग है । वेश्या समस्या अत्याधिक प्राचीन काल से समय समय पर अपने स्वरूप और उद्भव स्त्रोतों में परिवर्तन के साथ चली आ रही है,जिसके मूल में आर्थिकता ही है । संयुक्त परिवार के विघटन के कारण ही इस समस्या ने और उग्र रूप धारण किया,क्योंकि उसके द्वारा निराश्रित नारियों को जो आर्थिक सुरक्षा मिलती थी वह समाप्त हो गयी। पति की मृत्यू के बाद विधवा नारी,आर्थिक दृष्टि से निराधार परिवार द्वारा उपेक्षित समाज से लाँच्छित,पीडित तथा प्रताडित एकाकी परिवार की सीमा से निकाल कर व्यापक सीमा तक फेंक दी जाती है ।

मगवतीचरण वर्मा जी की 'चित्रलेखा' भी वेश्या समस्या का उद्घाटन करती है । लेकिन वर्माजी का दृष्टिकोण वेश्यासमस्या के चित्रण में अपने पूर्ववर्ती उपन्यासकारों से भिन्न रहा । प्रेमचंद युगीन उपन्यासकार जहाँ वेश्या समस्या पर सहानुभूतिपूर्ण ढंग से विचार करते हुए उनके पुनर्विवाह का व्यावहारिक समाधान उपस्थित करते हैं, वहाँ प्रारंभिक उपन्यासकार वेश्याओं को घृणा की दृष्टि से देखते हैं और उनका समाज में होना आवश्यक मानते हैं, परन्तु मगवतीचरण वर्मा की यथार्थवादी दृष्टि ने वेश्या समस्या को बडी सहानुभूति के साथ मौलिक ढंग से प्रस्तुत

किया है । ` चित्रलेखा ` में वर्माजी कला की अमर साधिका नर्तकी के महत्व का प्रतिपादन कर अपने उदारतावादी दृष्टिकोण का परिचय देते हैं । कला की अमर उपासिका नर्तकी, जिसकी आँखों में साधना का पीयूष घट-प्रेम छिपा रहता है । वह अगोचर को वाणी दे अपनी कला में बहुरंगी मयूर पंखों की आभा ले अंग-परिचालन द्वारा सात स्वरों से जीवन का राग गाती है, किन्तु समाज नर्तकी की कठिन साधना को क्या समझे, वह तो केवल उसकी कटि, ग्रीवा, कपोल, भ्रूविलास और नयनों की गतिविधियों में उलझाकर उत्सुक मुँह बनाये हुए वाह-वाह करते रह जाते हैं । योगी और तपस्वी की तरह साधना में अनुरक्त नर्तकी को समाज में कोई महत्व नहीं दिया जाता है । उसे अनुरंजन की चलती-फिरती सामग्री समझकर समाज ने उसके साथ न्याय नहीं किया है ।

समाज में नर्तकी अथवा वेश्या का प्रेम, प्रेम न होकर वासना अथवा भूख माना जाता रहा, किन्तु वर्माजी बीजगुप्त को चित्रलेखा से प्रेम करते दिखाते हैं, जो मात्र वासना नहीं है । वह उसे ` पत्नीवत ` स्वीकार करता है, संपत्ती, नहीं समझता । चित्रलेखा कुमारगिरि की भोग्या बनती हैं, इसके पश्चात भी बीजगुप्त के हृदय में उसके प्रति प्रेम समाप्त नहीं होता । ` प्रेम के प्रांगण में कोई अपराध नहीं होता `[5] कहकर वह चित्रलेखा को सहज भाव से स्वीकार करता है ।

५) <u>घर बाहर की समस्या --</u>

युगों से भारतीय नारी, समाज - व्यवस्था में गृहणी पद पर आसीन रही है, इसलिए उसके सामने राजनीतिक - सामाजिक - सांस्कृतिक रंगमंच पर आने का प्रश्न ही नहीं उठता था । नारी के लिए घर-बाहर के अन्तर्विरोध की समस्या भी ही नहीं । लेकिन आधुनिक भारत में स्वातंत्र्य संग्राम के साथ - साथ समाज के पीडित वर्गों - नारी, अछूत आदि का भी मुक्ति-आंदोलन चल रहा था । अत: भारतीय समाज में यह समस्या भी उठ खडी हुयी कि गृहणी पद तथा सामाजिक-राजनीतिक उत्तरदायित्वों में नारी किस तरह सामंज्यस लाए ।

भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में दो तरह के नारी पात्र मिलते हैं -- एक

तो पति, परिवार,समाज तथा पुरूष वर्ग से पीड़ित नारी, जो व्यक्तित्वहीन है और अपना स्वत्व पति के व्यक्तित्व में समाहित किये हैं और दूसरी पति,परिवार, एवं समाज से विद्रोह करनेवाली,आधुनिक चेतना संपन्न नारी,जो पारिवारिक, सामाजिक - राजनीतिक आदि सभी धरातलों पर अपने स्वतंत्र अधिकारों की माँग करती है। इसके लिए सतत संघर्ष करने में भी नहीं हिचकती। `चित्रलेखा` का ऐतिहासिक परिवेश हटाकर अगर देखा जाय तो उपन्यास की नायिका `चित्रलेखा` आधुनिक युग की विद्रोही नारी का प्रतिनिधित्व करती जान पड़ती है। वह पुरूष निर्मित मान्यताओं को स्वीकार करने को तैयार नहीं है। इसलिए पुरूष वर्ग द्वारा निर्मित मान्यताओं से बाहर जाकर विद्रोह करती है उसका बीजगुप्त से प्रेम भी इसी विद्रोह का एक पहलू है। `चित्रलेखा` कुमारगिरि के ईश्वर में विश्वास नहीं करती, न पाप-पुण्य के काल्पनिक पार्थक्य में ही उसकी आस्था है।

६) <u>पाप-पुण्य की समस्या --</u>

प्रेमचंद युग में हिन्दी उपन्यासों की आधारभूमि समाज रहा। उनमें विभिन्न सामाजिक समस्याओं को वाणी दी गई तथा उनके आदर्शवादी समाधान प्रस्तुत किए गए। व्यक्ति का चित्रण किया भी गया तो सामाजिक ईकाई के रूप में। उसे उसके संपूर्ण वैशिष्टय के साथ नहीं उभर गया। नंददुलारे वाजपेयीजी के अनुसार -- "व्यक्ति समाज का प्राणी होते हुए भी मूलत: व्यक्ति ही है,यह धारणा प्रेमचन्द के उपन्यासों में नहीं थी।"[६] लेकिन भगवतीचरण वर्मा ने व्यक्ति को अपनी रचना के केन्द्र में रखा। `चित्रलेखा` इसी व्यक्तिवादी दर्शन की देन है जिसमें पाप-पुण्य की समस्या को व्यक्तिवादी दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है।

`चित्रलेखा` सुधारवादी काल की रचना है। चित्रलेखा में केवल पाप-पुण्य की नवीन व्याख्या नहीं की है बल्कि भारतीय नैतिकता के मूल आधार को ही झकझोर कर रख दिया गया है। जिस सामाजिक विधान के आधार पर किसी आचरण को पाप की संज्ञा दी जाती है, वह विभिन्न समाजों में भिन्न-भिन्न - होता है। पाप-पुण्य की अवधारणा भी सार्वकालिक तथा सार्वदेशिय नहीं है।

इसका रूप देश, काल एवं समाज की सीमाओं के साथ परिवर्तित होता रहता है। पाप के स्वरूप और उसकी परिभाषाओं में निरन्तर परिवर्तन होता रहता है। एक समाज के निंदनीय कर्म को दूसरे समाज में श्लाघनीय माना जा सकता है। यहाँ तक कि एक ही समाज के विभिन्न वर्गों में भी ऐसा पाया जाता है। डॉ. जयशंकर प्रसाद के मतानुसार " पाप और कुछ नहीं है, जिन्हें हम छिपाकर करना चाहते हैं, उन्हीं कर्मों को पाप कह सकते हैं, परंतु समाज का एक बडा भाग यदि उसे व्यवहार्य बना दे तो वह कर्म हो जाता है, धर्म हो जाता है। जो एक के यहाँ पाप है, वही दूसरे के यहाँ पुण्य है।" [७]

पाप और पुण्य के प्रश्न को प्रस्तुत करने के लिए वर्मा जी ने उपन्यास में वासना, प्रेम, प्रवृत्ति - निवृत्ति आदि का विवेचन किया है। इसी उद्देश्य से योगी, ब्रह्मचारी, सामंत तथा नर्तकी आदि विविध पात्रों को विशेष रूप से प्रस्तुत करते हुए पात्रों के विचार एवं तर्कपूर्ण विनिमय का आश्रय लिया गया है। महाप्रभु रत्नाम्बर के माध्यम से पाप-पुण्य विषयक दृष्टिकोण प्रस्तुत करने के लिए ' उपसंहार ' तथा ' उपक्रमणिका ' का आयोजन किया गया है। सभी घटनाएँ एवं पात्र किसी न किसी रूप में इस समस्या से जुडे हैं। उपन्यास का प्रमुख पात्र बीजगुप्त तो स्थान - स्थान पर परिस्थिति विषयक दृष्टिकोण प्रकट करता है।

उपन्यास के प्रारंभ में सीधे श्वेतांक के प्रश्न " और पाप ? " के माध्यम से समस्या की स्थापना की गयी है। जिसका उत्तर देते हुए महाप्रभु रत्नाम्बर शिष्यों के समक्ष ईमानदारी इस विषय में अपनी अनभिज्ञता स्वीकार करते हैं। वे अपने दोनों शिष्यों को अनुभव के क्षेत्र में भेजकर उन्हें पाप-पुण्य का पता लगाने लिए स्वयं जाने के लिए कहते हैं। श्वेतांक भोगी बीजगुप्त के पास तथा विशालदेव योगी कुमारगिरि के पास भेजा जाता है। गुरू अपने शिष्यों को अनुभव के क्षेत्र में उतार देने के लिए विवश हैं क्योंकि उनकी दृष्टि में कोरा किताबी ज्ञान सत्य का साक्षात्कार नहीं करा सकता। निजी अनुभव के आधार पर ही सत्य का साक्षात्कार होता है तथा पाप-पुण्य की परीक्षा की जा सकती है। उपन्यास के अंत में दोनों शिष्यों के मुख से पाप- पुण्य की भिन्न-भिन्न परिभाषा प्रस्तुत करके गुरू रत्नाम्बर

के निर्णय द्वारा इसे दृष्टिकोण की विषमता मात्र सिध्द कर दिया गया है।

रत्नाम्बर पाप और पुण्य का एक अन्य कारण परिस्थितिजन्य विवशता को मानते है। उनका विश्वास है कि मनुष्य परिस्थितियों का दास है, वह कर्ता नहीं है केवल साधन है। फिर पाप और पुण्य कैसा ? हम न पाप करते हैं न पुण्य करते हैं, हम केवल वह करते है जो हमें करना पडता है।[८]

इस प्रकार रत्नाम्बर ने मन:प्रवृत्ति एवं परिस्थितियों के समक्ष मानवीय असहायता को पाप अथवा पुण्य का मूल माना है जबकि कुमारगिरि पाप का सम्बन्ध वासना से जोडते हैं।

श्वेतांक की दृष्टि में वह व्यक्ति पापी है जो अपने सुख के लिए संसार की बाधाओं से मुख मोड लेता है, अपने लिए जीवीत व्यक्ति का जीवन व्यर्थ है।[९] इसी आधार पर उसने बीजगुप्त को पुण्यात्मा तथा कुमारगिरि को पापी ठहराया है। अर्थात परहित की चिन्ता छोडकर केवल स्वहित के लिए जीना पाप है। समाज में जीवन यापन करते हुए पर के लिए स्व को विसर्जित कर देना पुण्य है और निज के लिए परपीडन पाप।

विशालदेव भी कुमारगिरि के समान साधना के माध्यम से ममत्व को वशीभूत करने को पुण्य तथा सांसारिक भोग-विलास को पाप मानता है।

चित्रलेखा ने पाप एवं पुण्य के भेद को ही मिथ्या बताया है क्योंकि उसकी दृष्टि में अनुराग का सुख विराग का दु:ख है। अर्थात भोगी का पुण्य योगी के लिए पाप है। अत: दृष्टिकोण की विषमता के आधार पर ही पाप और पुण्य में भेद किया जा सक्ता है।

लेखक ने पात्रों में पाप-पुण्य सम्बन्धि विभिन्न दृष्टिकोण को सामने लाते हुए इस समस्या को मुख्यत: तीन रूप में प्रस्तुत किया है। कुमारगिरि एवं विशालदेव ने पाप का आधार वासना एवं भोग - विलास को माना है। श्वेतांक केवल अपने सुख के लिए जीना पाप समझाता है। चित्रलेखा एवं रत्नाम्बर पाप और पुण्य में

कोई भेद न मानते हुए उसे ' दृष्टिकोण की विषमता' कहते हैं। रत्नाम्बर ने इसे परिस्थिति की विवशता भी कहा है।

इस प्रकार भगवतीचरण वर्माजी के ' चित्रलेखा' में पाप-पुण्य को लेकर व्यक्तिवादी दर्शन दिखाई देता है जो समाज के लिए हितकारी नहीं माना जा सकता। यदि मन:प्रवृत्ति को ही मनुष्य के प्रत्येक कार्य का नियामक मान लिया जाय, तो प्रत्येक व्यक्ति की मनोवृत्ति भिन्न भिन्न होने के कारण उसके सांस्कृतिक मूल्य भी भिन्न भिन्न होंगे। वर्माजी के व्यक्तिवादी मत से सहमत होना असंभव नहीं तो अत्यंत कठीण अवश्य है। उनके अपने कथन से ही स्पष्ट है कि उन्होंने निजी दृष्टिकोण से इसकी जाँच की है -- ' चित्रलेखा ' में मानव-जीवन को तथा उसकी अच्छाईयों - बुराईयों को देखने का मेरा अपना दृष्टिकोण है, और उसमें मेरी आत्मा का संगीत भी है।'[१०] भगवती बाबू चित्रलेखा' में सामाजिक समस्या को लेकर दर्शन और चिन्तन के आधार पर मनुष्य के पाप-पुण्य की व्यक्तिवादी व्याख्या प्रस्तुत करते हैं। वह व्यक्तिवादी मनुष्य को फिर से आदि मानव की श्रेणी में पहुँचा देगा जहाँ से उसने संस्कृति की यात्रा प्रारंभ की थी। इस विषय में नंददुलारे वाजपेयी जी का मत है कि' वर्माजी नैतिकता को नया मनोवैज्ञानिक आधार देना चाहते है अथवा यों कहें कि नये मनोविज्ञान पर नई नैतिकता का निर्माण करना चाहते हैं पर इतने बडे प्रश्नों को इतनी हल्की कलम से संभाल पाना संभव नही।'[११] यही कारण है कि वे पाप - पुण्य की समस्या को उठाकर प्रचलित मान्यताओंपर कुछ-प्रश्न-चिन्ह् तो अवश्य लगा देते हैं किंतु कोई समाजोपयोगी समाधान नहीं दे पाते।

निष्कर्ष --

भारतीय समाज के परिवर्तनों को भगवती बाबू ने एक सजग व्यक्ति और सजग साहित्यकार की आँखों से देखा। प्रेमचंदोत्तर युग में जिन साहित्यकारों ने अपने उपन्यासों के माध्यम से सामाजिक समस्याओं को सामने रखा है। उनमें भगवती बाबू का स्थान अत्यंत उँचा है। यह एक ध्यान देने योग्य तथ्य है कि

विचारों से व्यक्तिवादी होने पर भी उनके उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं का चित्रण हुआ है।

भगवतीचरण वर्माजी ने 'चित्रलेखा' के माध्यम से सामाजिक समस्याओं की उद्घोषणा की है। नारी और विवाह की समस्या, अवैध प्रेम की समस्या, विधवा समस्या, वेश्या समस्या, घर-बाहर की समस्या और पाप-पुण्य की समस्या इन सारी समस्याओं का 'चित्रलेखा' में चित्रण मिलता है। चित्रलेखा के द्वारा नारी और विवाह की जो समस्या निर्माण हुयी है उसे सामन्त बीजगुप्त के द्वारा पुष्टी मिली है। चित्रलेखा जो विधवा ब्राह्मण युवती थी बाद में कृष्णादित्य के प्रेम में असफल हो जाने के बाद नर्तकी बन जाती है। उसी के साथ बीजगुप्त प्रेम करता है यहाँ तक जिस नर्तकी का समाज में कोई स्थान नहीं होता उसे वह अपनी पत्नी के समान मानता है। अपने जीवन में वह किसी नारी के साथ विवाह नहीं करता। इस प्रकार भगवती बाबू ने नारी को महत्व देकर उसका समाज में स्थान बनाये रखने का प्रयास किया है।

चित्रलेखा में हमें अवैध प्रेम की समस्या भी दिखाई देती है। चित्रलेखा विधवा हो जाने के पश्चात भारतीय परम्परा के अनुसार अपना जीवन संयम से बिता रही थी। लेकिन कृष्णादित्य उसके जीवन में आने के कारण उसकी तपस्या भंग हो जाती है। चित्रलेखा और कृष्णादित्य के सम्बन्ध को समाज स्वीकार नहीं करता। कृष्णादित्य की मृत्यु के पश्चात चित्रलेखा नर्तकी बनती है और अपना जीवनबिताती है। फिर बीजगुप्त के साथ उसकी पत्नी बनकर रहना पसंद करती है। भगवतीचरण वर्माजी ने 'चित्रलेखा' के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि समाज में नारियों का जो स्थान है अगर उनका शोषण होता रहे तो अवैध प्रेम की समस्या का निर्माण होती है।

'चित्रलेखा' में अभिव्यक्त विधवा, समस्या, वेश्या समस्या भी नारी जीवन की पहलुओं को प्रकट करती है। समाज में विधवाओं का कोई स्थान नही होता और इसलिए समाजद्वारा शोषित नारी वेश्या बनना स्वीकार करती है। भगवतीचरण

वर्माजी ने ` चित्रलेखा` के द्वारा ये समस्याएँ उजागर की है। उन्होंने ` चित्रलेखा` को वेश्या नहीं माना है। वर्माजी ने वेश्याओं की समस्या को यथार्थवादी दृष्टिकोण से सहानुभूति के साथ प्रस्तुत किया है। समाज में नर्तकी अथवा वेश्या को हीन दृष्टि से देखा जाता था। लेकिन वर्माजी ने बीजगुप्त को चित्रलेखा से प्रेम करते दिखलाया है। घर-बाहर की समस्या के अंतर्गत पुरुष वर्ग की मान्यताओं की स्वीकृति नहीं मिली है।

` चित्रलेखा` में सबसे महत्वपूर्ण समस्या रही है, पाप और पुण्य की। यह पाप-पुण्य की समस्या प्रारंभ से अंत तक बनी रही है। हर एक पात्र अपनी अपनी दृष्टि से पाप और पुण्य बताते हैं। इसलिए ` चित्रलेखा` में भगवती बाबू का व्यक्तिवादी दर्शन मिलता है।

संक्षेप में भगवती बाबू ने ` चित्रलेखा` के द्वारा समाज में स्थित समस्याओं का निर्माण किया है जो सामाजिक समस्या नारी बनती है उसे गिरने से बचाना चाहा है।

संदर्भ

१)	डॉ.रमाकान्त श्रीवास्तव	`व्यक्तिवादी एवं नियतिवादी चेतना के संदर्भ में भगवतीचरण वर्मा`	पृ.२५३
२)	भगवतीचरण वर्मा	`चित्रलेखा`	पृ.१४७
३)	- वही -	- वही -	पृ.१०६
४)	- वही -	- वही -	पृ.६४
५)	- वही -	- वही -	पृ.२९
६)	नंददुलारे वाजपेयी	` नया साहित्य, नए प्रश्न	पृ.२१८
७)	जयशंकर प्रसाद	`कंकाल`	पृ.७
८)	भगवतीचरण वर्मा	चित्रलेखा	पृ.१७७
९	- वही -	- वही -	पृ.१७६
१०	- वही -	- वही - (भूमिका में)	
११)	नंददुलारे वाजपेयी	नया साहित्य नये प्रश्न	पृ.२१९

BARR. B[illegible]RDEKAR LIBRARY
SHIVAJI [illegible] KOLHAPUR